राँची जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. एस. पी. यादव
157/173 शेषपुर निकट
राजकीय बस स्टेशन, जैनपुर–2

सरिता कुमारी
शोधार्थी,
वाई.बी.एन. विश्वविद्यालय, नामकुम, राँची–10

1. प्रस्तावना

वर्तमान समय में सामाजिक परिवर्तन एवं आधुनिकीकरण की इस प्रक्रिया में शिक्षा का दायित्व सर्वाधिक गुरुत्तर होता जा रहा है। शिक्षा का लक्ष्य ज्ञान प्राप्ति, पुरातन ज्ञान को वर्तमान परिस्थिति में उपयोग, समाज को विज्ञान कृषि चिकित्सा, तकनीकी क्षेत्रों में व्यक्ति को प्रशिक्षित करके सामाजिक न्याय को प्रोत्साहित करना है। व्यक्ति जनम से ही किसी न किसी कार्य को करने का प्रयास करता रहता है जो कि जीवन पर्यन्त चलता है। कभी वह लक्ष्यों की पूर्ति करने के लिए प्रयास करता है। तो कभी अन्तिम लक्ष्यों को प्रापत करने के लिए। कुछ ऐसे कारक हैं जो व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन करने के लिए प्रेरित करते ही इन्हीं का अध्ययन अभिरूचि के अन्तर्गत किया जाता है। सामान्यतः रूचि शब्द छोटा होने के पश्चात् भी अपने में बड़ा ही गढ़ अर्थ समेटे हुए हैं। शिक्षा के सर्वांगीण विकास के संदर्भ में प्रत्येक विद्यार्थियों की रूचियां भिन्न–भिन्न होने के कारण एक समस्या उत्पन्न हो जाती है। विद्यार्थियों की शिक्षा को रूचिकर बनाकर उन्हें उनके लक्ष्य की ओर अग्रसर किया जा सकता है। रूचिया जन्मजात होने के साथ अर्जित भी की जा सकती है क्योंकि यह वस्तुपरक नहीं होती और न ही इनका कोई भौतिक स्वरूप ही होता है। रूचियों का सम्बन्ध भावनाओं से होता है जो अस्थायी होती है और समय के साथ परिवर्तनशील रहती है। किसी भी विद्यार्थी की समस्या का समाधान करने के लिए यह आवश्यक है कि सभी विद्यार्थियों की जाँच किया जाय और रूचियाँ ही यह स्पष्ट रूप से बताती है कि विद्यार्थी अपने लक्ष्य को किस हद तक प्राप्त कर सकते हैं? व्यक्तिगत भिन्नता के कारण ही आप मनोवैज्ञानिक युग में रूचि को विशेष महत्व दिया जाना प्रासांगिक है। अतः स्पष्ट रूप से यह कहना उपयुक्त होगा कि शिक्षकों और अभिभावकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि रूचियों के हिसाब से ही विद्यार्थियों का अध्ययन कराया जाय।

2. शैक्षिक रूचि

रूचि अंग्रेजी भाषा के INTEREST का हिन्दी रूपान्तरण है इसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के INTERESEE से हुई है जिसका तात्पर्य अन्तर स्थापित करना, महत्त्वपूर्ण होना और लगाव है। अतः रूचि के माध्यमसे उद्दीपक में भिन्नता, महत्ता और लगाव स्थापित किया जाता है। विद्यार्थियों में विभिन्न प्रकार की रूचियों को उत्पन्न करके उन्हें अलग–अलग क्षेत्रों में स्थापित किया जा सकता है। रूचियों के द्वारा ही विद्यार्थियों को कई प्रकार के कार्यों को बताकर उसी क्षेत्र में उनकी सहायता करके एक नई दिशा दी जा सकती है।

3. अध्ययन की आवश्यकता

प्रत्येक अध्ययन अपना एक शैक्षिक महत्व रखता है। किसी भी प्रकार का शोध शिक्षा के दृष्टिकोण में यदि महतव नहीं रखता है तो ऐसे अध्ययन की कोई आवश्यकता नहीं होती है। इसी लक्ष्य को ध्यान

में रखते हुए प्रस्तुत समस्या भी शैक्षिक महत्व को व्यक्त करती है। सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट है कि सभी लोग एक–दूसरे से भिन्न है और उनकी भिन्नता का कारण भी सभी विद्यार्थियों की रूचि का भिन्न होना है। इसी को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी को प्रस्तुत शोध शीर्षक में विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि का अध्ययन करने की आवश्यकता प्रतीत हुई।

4. अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि का अध्ययन करना है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में सुविधानुसार शोध उद्देश्य अग्र अंकित है

1. राँची जनपद के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि का अध्ययन करना।
2. राँची जनपद के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की शैक्षिक रूचि का अध्ययन करना।

5. शोध अध्ययन की परिकल्पना

किसी भी शोध अध्ययन में शोध परिकल्पना का निर्माण करना अत्यन्त आवश्यक है। किसी भी समस्या से संबंधित संभावित समाधान पर विचार करना ही परिकल्पना है। परिकल्पना के अभाव में किसी भी प्रकार का शोध कार्य उद्देश्यहीन क्रिया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया है –

1. राँची जनपद के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक रूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

6. शोध अध्ययन की विधि

शोध अध्ययन के लिए तथा किसी भी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए शोध विधि का होना आवश्यक है। शोध विधि द्वारा प्रक्रियात्मक दिशा प्रदान किया जाता है। इसके द्वारा परिकल्पना का परीक्षण अधिक से अधिक शुद्धता, वस्तुनिष्ठता और मितव्ययिता से किया जाता है। वर्तमान समय में मानव अपनी समस्या के समाधान के लिए अनेक विधिया का सृजन किया है। अतः समस्या की प्रृति के अनुरूप शोधार्थी ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है जो आज के समय में प्रासंगिक प्रतीत होता है।

7. जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में राँची जनपद के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में चयनित किया गया है।

8. प्रयुक्त उपहरण

शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध में उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक रूचि यापन के लिए डॉ0 एस0पी0 कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित रूचि परिसूची परीक्षण को प्रयुक्त किया है जिसे दो भागों में विभक्त किया गया है। परीक्षण के दोनों भागों में सात प्रकार के क्षेत्रों की जानकारी के लिए सात प्रकार के फलांकन कुंजी का प्रयोग किया गया है।

9. सांख्यिकी विधियाँ

शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में आंकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान (M), मानक विचलन (SD) तथा C.R. अनुपात (परीक्षण) का प्रयोग किया गया है।

10. आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण एवं अध्ययन की व्याख्या निम्न सारणी द्वारा प्रदर्शित है –

उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक रूचि के मध्यमानों की तुलना एवं CR (अनुपात) परीक्षण का परिणाम :

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	CR (अनुपात) परीक्षण	सार्थकता
छात्र	250	34.181	7.857	3.170	सार्थक
छात्राएँ	250	32.551	8.388		

0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान = 1.96
0.01 स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान = 2.50

सी अनुपात का मान 0.01 स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.96 से अधिक है। इसलिए सी. अनुपात का मान 0.01 स्तर पर सार्थक है। इसलिए सी. अनुपात का मान 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना 0.01 स्तर पर अस्वीकृत हो जाती है अर्थात् उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक रूचि में सार्थक अन्तर है। अतः यह स्पष्ट है कि छात्रों का अध्ययन छात्राओं की मध्यमान से अधिक है। अतः उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की अपेक्षा अधिक रखते हैं।

11. शोध अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ

शोधार्थी द्वारा प्राप्त निष्कर्षों के विवेचना के उपरान्त शोधगत शैक्षिक निहितार्थ का प्रस्तुतीकरण किया गया है। प्रस्तुत शोध में प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर विद्यार्थियों की रूचियों को ध्यान में रखकर कुछ उपयोगी सुझाव दिये जा सकते हैं। छात्रों में व्यक्तिगत भिन्नता के कारण शैक्षिक रूचि की अवहेलना नहीं की जा सकती है। अतः शिक्षा को वैभिन्नता के अनुसार देना आवश्यक है। यदि विद्यार्थियों के समक्ष किसी भी प्रकार की कठिनाई आती है तो विद्यालय के पास उसके निराकरण के उपाय भी व्यक्तिगत रूप से होने चाहिए। प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम देखते हुए सरकार व अन्य प्रतिष्ठानों, अभिभावकों को ऐसी योजना का निर्माण करना चाहिए जिससे छात्रों की अध्ययन की आदतों में सुधार किया जा सके तथा उनकी रूचि रचनात्मक कार्यों में उत्पन्न की जा सके जो समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए उपयोगी तथा महत्वपूर्ण हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.अग्रवाल, एस.क. शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, मेरठ पब्लिसर्स
2.गुप्ता, एस.पी. सांख्यकीय विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
3.पाठक, पी.डी. शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
4.शर्मा, आर.ए. शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, आर लाल बुंक डिपो।
5.रायअ पारसनाथ : अनुसंधान परिचय, विनोद प्रकाशन आगरा।
6.सारस्वत, मालती : शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा आलोक प्रकाशन, लखनऊ।